विश्व न्याय मन्दिर

25 मार्च 2007

विश्व के बहाईयों को

प्रिय बहाई मित्रगण,

दुनिया के सभी हिस्सों में समाज के विघटन के अनेक चिह्नों में से एक है व्यक्ति और शासन करने वाली संस्थाओं के बीच परस्पर विश्वास और सहयोग का समाप्त होना। अनेक देशों में निर्वाचन की प्रक्रिया स्थानिक भ्रष्ट्राचार के कारण अपनी साख खो चुकी है। एक इतनी महत्वपूर्ण प्रक्रिया में बढ़ रहे अविश्वास के कारण हैं, निहित स्वार्थी तत्व, जिनके पास अथाह सम्पत्ति है, का परिणाम पर प्रभाव, समूहगत प्रणाली में व्याप्त विकल्प चुनने की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध तथा मीडिया द्वारा पक्षपातपूर्ण अभिव्यक्ति से उम्मीदवारों के प्रति आम जनता की विकृत सोच उत्पन्न होना। उदासीनता, विरक्ति और मोह-भंग होना भी इसके परिणाम हैं; साथ ही निराशा की इस भावना का घर करना कि ऐसे क्षमतावान नागरिक शायद ही उठ खड़े होंगे जो एक दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की विविध समस्याओं के समाधान निकाल पाएँगे। सर्वत्र ऐसी संस्थाओं के लिये उत्कण्ठा के संकेत मिल रहे हैं जो न्याय दिलाएँगी, दमन दूर करेंगी और समाज के पृथक तत्वों में स्थायी एकता को बढ़ावा देंगी।

बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था दिव्य रूप से निर्धारित की गई व्यवस्था है जिसकी तलाश दुनिया के देश और लोग इतनी बेसब्री से कर रहे हैं। यह व्यवस्था जिसे बाब ने फारसी 'बयान' में स्थापित किया और जिसके आधारभूत सिद्धान्तों का स्वयं बहाउल्लाह ने अनुमोदन किया; अपने न्याय के मापदण्ड, मानवजाति की एकता के व्यावहारिक प्रत्यक्षीकरण के लिए प्रतिबद्धता, साथ ही विश्व सभ्यता में परिवर्तन और प्रगति लाने की इसकी क्षमता के लिए मानव इतिहास में बेमिसाल है। यह व्यवस्था उन साधनों को मुहैय्या कराती है जिनके द्वारा 'दिव्य इच्छा' मानव-प्रगति का मार्ग प्रकाशित करती है और धरती पर अन्ततः ईश्वर के साम्राज्य की स्थापना के लिये मार्गदर्शन देती है।

समस्त धरती पर बहाउल्लाह के समर्पित अनुयायी, धर्मसंरक्षक द्वारा वर्णित बहाई प्रशासनिक व्यवस्था को आगे ले जाने के लिए परिश्रम कर रहे हैं, "जो नई विश्व व्यवस्था का न केवल नाभिक है, अपितु ढाँचा भी है।" इस प्रकार विश्व सभ्यता की आधारशिला रखी जा रही है जो आने वाली शताब्दियों में चकाचैंध कर देने वाले वैभव के लिये नियत है। वे सूचित उथल-पुथल और अव्यवस्था के बावजूद ऐसा कर रहे हैं जिसकी पुष्टि बहाउल्लाह करते हैं कि "इस सर्वमहान, इस नई विश्व-व्यवस्था के स्पन्दित कर देने वाले प्रभाव ने समस्त संसार के संतुलन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। इस अद्वितीय, इस अद्‌भुत विश्व व्यवस्था ने मानवजाति के व्यवस्थित जीवन को आन्दोलित कर दिया है, जैसा नश्वर नेत्रों ने कभी नहीं देखा।"

पाँच वर्षीय योजना के विभिन्न प्रावधानों को लागू करके दुनिया भर में किये जा रहे सम्मिलित प्रयास से समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को जो गति मिल रही है, इस कारण अब यह समय के अनुरूप है कि सभी जगह अनुयायी उस प्रक्रिया को मजबूत करने की ओर अधिक ध्यान दें जिस प्रक्रिया के माध्यम से राष्ट्रीय और स्थानीय सभाएँ चुनी जाती हैं। इन चुनावों में जिस प्रकार समुदाय के सभी वयस्क सदस्य भाग लेते हैं वह बहाउल्लाह की 'प्रणाली' की विशिष्ट पहचान बनाने वाली विशेषता है, क्योंकि यह प्रत्येक बहाई का एक ऐसा बाध्यकारी कर्तव्य है, जो उन्हें अस्तित्व में लाये जा रहे एक नये विश्व के उत्तरदायी नागरिक के रूप में, उन संस्थाओं के चुनाव करने का उच्च सौभाग्य प्रदान करता है जो संस्थाएँ बहाई समुदाय के काम-काज को संचालित करने का अधिकार रखती हैं। इस सम्बन्ध में किसी भी अनुयायी की उदासीनता और उपेक्षा प्रभुधर्म के अभिप्राय से विमुख होना होगा। मित्रों को ऐसी विनाशकारी प्रवृत्तियों से बचने का अथक प्रयास करना चाहिये, जिन्होंने ध्वस्त होती हुई एक विश्व व्यवस्था की संस्थाओं की समग्रता व अधिकार को इतना नुकसान पहुँचाया है।

शोग़ी एफ़ेंदी ने अपनी ओर से लिखे गये एक पत्र के माध्यम से बहाई चुनावों का वर्णन करते हुए लिखा है कि "वास्तव में बहाई निर्वाचन प्रणाली और प्रक्रिया का एक प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक अनुयायी में उसके दायित्व की चेतना का विकास करना है। चुनावों में उसकी पूरी स्वतंत्रता की आवश्यकता को बनाये रखने पर बल देते हुए बहाई चुनाव उसके लिये यह आवश्यक बना देते हैं कि वह जिस बहाई समुदाय में रहता है उसका एक सक्रिय व अच्छा-जानकार सदस्य बने।"

इसलिए जिस प्रकार निर्वाचक मत देने के अपने अधिकार और सौभाग्य का उपयोग करता है वह काफी महत्व का होता है। इस उद्धरण में आगे शोग़ी एफ़ेंदी का निर्देशन समझाता है कि "चुनाव के समय विवेकपूर्ण चयन करने में समर्थ होने के लिये यह आवश्यक है कि वह सभी स्थानीय गतिविधियों के निकट सम्पर्क में लगातार बना रहे, चाहे वह प्रभुधर्म का शिक्षण हो, कोई प्रशासनिक कार्य या फिर कोई अन्य, साथ ही, पूरी तन्मयता के साथ वह अपने देश की स्थानीय तथा राष्ट्रीय समितियों और सभाओं के काम-काज में हिस्सा ले। केवल इस प्रकार ही एक अनुयायी अपनी सच्ची सामाजिक चेतना का विकास कर सकता है और प्रभुधर्म के हितों को प्रभावित करने वाले मामलों के प्रति अपनी जिम्मेदारी का सच्चा एहसास पा सकता है। इस प्रकार प्रत्येक निष्ठावान और ईमानदार अनुयायी के लिये बहाई सामुदायिक जीवन यह कर्तव्य निर्धारित कर देता है कि वह एक बुद्धिमान, अच्छा-जानकार और उत्तरदायी निर्वाचक बने; साथ ही, उसे यह अवसर भी देता है कि वह अपने आपको इस स्थान तक ऊपर उठा सके।"

बहाई चुनावों के सम्बन्ध में हालाँकि व्यक्तित्वों का उल्लेख नहीं होना चाहिये, तथापि अनुयायियों के लिये यह उचित है कि संस्थाओं के लिये चुने जाने वाले लोगों की सदस्यता की आवश्यकताओं और योग्यताओं पर विचार-विमर्श करें। इस सम्बन्ध में शोग़ी एफ़ेंदी स्पष्ट मार्गदर्शन देते हैं: "मैं मानता हूँ कि चुनाव के पहले व्यक्तित्वों की चर्चा गलतफहमी और भेदभाव को बढ़ावा देगी। मित्रों को करना यह चाहिये

कि वे एक-दूसरे से पूरी तरह परिचित हो जाएँ, विचारों का आदान-प्रदान करें, मुक्त रूप से एक-दूसरे से मिलें और किसी व्यक्ति विशेष के लिए बिना संकेत या निवेदन के, चाहे वह कितना भी अप्रत्यक्ष क्यों न हो, ऐसी सदस्यता की आवश्यकताओं और योग्यताओं पर एक-दूसरे से खुल कर विचार-विमर्श करें।" धर्मसंरक्षक द्वारा सुस्पष्ट जिन "आवश्यक योग्यताओं" की चर्चा की गई है उनमें "असंदिग्ध निष्ठा, स्वार्थविहीन धर्मानुराग, सुप्रशिक्षित मन, जानी-पहचानी योग्यता और परिपक्व अनुभव" हैं। निर्वाचित संस्था द्वारा किये जाने वाले काम-काज की उच्च स्तरीय जानकारी के साथ अनुयायी उन लोगों के बारे में समुचित मूल्याँकन कर सकते हैं जिनके लिये मत दिया जाना है। उस सूची से जिन्हें निर्वाचक यह समझते हैं कि वे सेवा करने के योग्य हैं आयु वर्ग, विविधता और लिंग जैसे अन्य घटकों को यथोचित ध्यान में रखते हुए चयन किया जाना चाहिये। वास्तविक चुनाव के पहले विस्तृत समय में ध्यानपूर्वक विचार करते हुए निर्वाचक को अपनी पसंद निर्धारित कर लेना चाहिए।

जब किसी बहाई चुनाव में मतदान करने के लिये आह्वान किया जाये तब अनुयायियों को इस बात का ज्ञान होना चाहिये कि वे इस 'विधान' के एक अद्वितीय पवित्र दायित्व का निर्वाह करने जा रहे हैं। उन्हें अपने इस कर्तव्य को एक प्रार्थनामय प्रवृत्ति के साथ, दिव्य मार्गदर्शन और सम्पुष्टि की याचना करते हुए निभाना चाहिये। जैसी सलाह शोग़ी एफ़ेंदी ने दी है, "उन्हें अवश्य ही पूर्णतः ईश्वर की ओर उन्मुख होना चाहिये और उद्देश्य की पवित्रता, मुक्त चेतना और हृदय की शुद्धता के साथ चुनावों में भाग लेना चाहिये।"

पूरी तन्मयता के साथ बहाई निर्वाचन प्रक्रिया को अपना कर ही अनुयायी दिन-ब-दिन बहाई प्रशासनिक व्यवस्था की उभरती हुई संस्थाओं और अपने आस-पास ध्वस्त होती हुई सामाजिक व्यवस्था के बीच की विषमता को देखेंगे। इस बढ़ते हुए अन्तर में बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था के गौरव का वचन साक्षात् होगा -- एक ऐसी 'प्रणाली' जो मानवजाति की सर्वोच्च अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

-विश्व न्याय मंदिर